मम्मटाभिमत गुणीभूतव्यङ्ग्यप्रभेदविमर्श

Bipin kumar Jha

Dept Sahitya, Rashtriya Sanskrit Sansthan, Balahar, HP

[kumarvipin.jha@gmail.com]

कूटशब्द-

ध्वनि, गूणीभूतव्यङ्ग्य, मम्मट, संलक्ष्यक्रमध्वनि, असंलक्ष्यक्रम रसादिध्वनि

शोधसार-

साहित्यशास्त्रियों ने काव्य का विभाजन उत्तम मध्यम एवं अधम इन तीन प्रकारों से किया है वहीं पण्डितराजजगन्नाथ ने उत्तमोत्तम नामक एक नवीन भेद को भी प्रस्तुत किया है। काव्य के विभाजन का आधार सभी ने एक मत से ध्वनि को माना। प्रकृत शोधपत्र में मध्यमकाव्य की प्रकृति एवं मम्मट की दृष्टि का सांगोपांग विवेचन किया गया है।

वैयाकरणसम्मत ध्वनि[1]की आधारशिला पर काव्यशास्त्रियों ने ध्वनि को विशेष स्थान देते हुए काव्य का विभाजन ध्वनि[2] गुणीभूतव्यङग्य[3]एवं चित्र काव्य[4] के रूप में किया है। वाग्देवतावतार आचार्य मम्मट ने अपने ग्रन्थ काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में इस आशय को व्याख्यायित किया है। ध्वनि काव्य को उत्तमकाव्य गुणी भूतव्यङग्य को मध्यम एवं चित्र को अवरकाव्य के रूप में सोदाहरण[5] प्रस्तुत किया है। इन त्रिविध काव्यों का विशद विवेचन क्रमशः चतुर्थ पञ्चम एवं षष्ठम उल्लासों में आचार्य़ मम्मट द्वारा किया गया है। मम्मटाभिमत गुणीभूतव्यङ्ग्य वहीं सम्भव है जहाँ व्यङग्यार्थ वाच्य से अधिक चमत्कारी न हो। इस गुणीभूतव्यङ्ग्य की

[1]बुधैर्वैयाकरणौः प्रधानभूतस्फोट रूप ..... ध्वनिरिति व्यवहारः कृतः। प्रथमोल्लास काव्यप्रकाशः पृ.29

[2]इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः। वही कारिका 4

[3]अतादृशि गुणीभूतव्यङ्ग्यं व्यङ्ग्ये तु मध्यमम्। वहीं कारिका 5

[4]शब्दचित्रं वाच्यचित्रमव्यङ्ग्यं त्ववरं स्मृतम्। वहीं कारिका 5

[5]स्वच्छन्दोच्छलदच्छकुहरच्छाते तराम्बुच्छटा। मूर्च्छन्मोहमहर्षिहर्षविहित स्नानाह्निकाह्वाय वः 9.1 भिद्यादुद्यदुदारदर्दुरदरीदीर्घादरिद्रद्रुम-द्रोहोदोद्रेकमहोर्मि मेदुरमदामन्दाकिनी मन्दताम्। वहीं श्लोक 4

Anusandhaana (Peer-reviewed International Research Journal) 1 - August 2015 ISSN : 2395 – 0528 Published by Aisiri Prakashana (R) Mammatabhibhuta-guNeebhuta-vyaNgya-vimarshah Bipin Kumar Jha 65-71

परिभाषा एवं उदाहरण तो प्रथम उल्लास में प्रस्तुत किया गाया है किन्तु भेदोपभेद की चर्चा पञ्चम उल्लास[6] में विशद रूप में प्रस्तुत किया गया है, जहाँ आरम्भ में ही मम्मट ने कहा है- 'एवं ध्वनौ निर्णीते गूणीभूतव्यङ्ग्यप्रभेदान् आह'।

आचार्य मम्मट ने गुणीभूतव्यङ्ग्य के आठ भेदों को प्रस्तुत करते हुए उनके उपभेदों को सोदाहरण प्रस्ततु किया है ये आठ भेद क्रमशः अगूढव्यङ्ग्य, इतर का अङ्गभूतव्यङ्ग्य,वाच्यसिद्धि का अंग भूतव्यङ्ग्य, सदिग्धप्राधान्यव्यङ्ग्य, तुल्यप्रधान्यव्यङ्ग्य, काकु से आक्षिप्तव्यङ्ग्य, असुन्दरव्यङ्ग्य हैं।[7]

इन भेदों में से प्रथम भेद है अगूढव्यङ्ग्य। वस्तुतः ध्वनि काव्य सहृदयजन संवेद्य होता है जबकि अगूढ सामान्यजन द्वारा भी संवेद्य है। जबकि गूढव्यङ्ग्य सहृदयजन के द्वारा भी सर्वथा असंवेद्य होता है। ये दोनों ही गूढ एवं अगूढ गुणीभूतव्यङ्ग्य के प्रभेद स्वीकृत है।[8] आशय को आचार्यो ने त्रिदेशीया स्त्री के कुचकलश के उपमा के माध्यम से स्पष्ट किया है।[9] इस तथ्य को आचार्य मम्मट भी आत्मसात करते हुए कहते है 'कामिनी कुचकलशवद गूढं चमत्करोति'। अगूढरूप गुणीभूतव्यङ्ग्य के प्रथम प्रभेद का दो उदाहरण आचार्य मम्मट ने प्रस्तुत किया है-लक्षणामूलध्वनि के अर्थान्तरसंक्रमितवाच्यभेद से गुणीभूत होने के कारण प्रथम उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया है तो वहीं लक्षणा मूलध्वनि के ही अत्यन्ततिरस्कृतवाच्य भेद से गुणीभूत होने के कारण द्वितीय उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया है। प्रथम उदाहरण[10] में 'जीवन्' पद 'निन्दितजीवन' रूप अर्थान्तर में संक्रमितवाच्य के ध्वनि के अत्यन्त गूढ होने से गुणीभूत व्यङ्ग्य के गूढ का प्रथम उदाहरण वना[11]जबकि द्वितीय उदाहरण[12] में 'उदयाचलचुम्बि विम्बम्' में वक्त्रसंयोग व्यापार रूप 'चुम्बन' इस अर्थ के सर्वथा बाधित होने के कारण सामान्य संयोग इस अर्थ को प्रस्तुत करता है अर्थात् प्रारंभिक अर्थ का अत्यन्त तिरस्कार किया गया है

[6]एवं ध्वनौ निर्णीते गुणीभूतव्यङ्ग्यप्रभेदान् आह। काव्यप्रकाश पंचमोल्लास पृ.196

[7]अगूढमपरस्यागं वाच्यसिध्यङ्गमस्फुटम्। वहीं

[8]कामिनी कुचकलशवद् गूढं चमत्करोति, अगूढं तु स्फुटतया वाच्यायमानमिति गुणीभूतमेव। का. प्र.पृ. 197

[9]नान्ध्रीपयोधर इवातिरतां …… कुचाभः। का.प्र.पृ.196

[10]यस्यासुहृत्कृततिरस्कृतिरेत्य तत्पेति। का.प्र.प.उ. शलोक 113

[11]काव्यप्रकाश पं.उ.पृ.197

[12]उन्निद्रकोकनदरेणु पिशङ्गिताङ्गा। वही शलोक 114

इस कारण यह अत्यन्त तिरस्कृतवाच्य 'चुम्बन' का सहज स्पष्टकारक होने के कारण अगूढगुणीभूत व्यङ्ग्य का उदाहरण बना।[13]

अगूढव्यङ्ग्य के तृतीय उदाहरण का आधार पूर्वोक्त दो उदाहरणों के समान ही है प्रथम एवं द्वितीय उदाहरण लक्षणामूलध्वनि को ध्यान में रखते हुए किया गया है जबकि तृतीय का उदाहरण अभिधा मूलध्वनि को ध्यान में रखते हुए दिया गया है। तृतीय उदाहरण में के 'नापि' इस अर्थशक्तिमूल अनुरणनरूपसंलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्य के अगूढ होने के कारण गुणीभाव को प्राप्त किया है।[14]

गुणीभूतव्यङ्ग्य के प्रथम प्रभेद के तीन उदाहरण देने के बाद द्वितीय भेद का क्रमावसर प्राप्त होता है। द्वितीय भेद के चर्चा के क्रम में आचार्य मम्मट ने कुल दस उदाहरण प्रस्तुत किए है-

1. जहाँ रस अन्य रस का अङ्ग है।[15]
2. जहाँ भाव रस का अङ्ग है।[16]
3. जहाँ भाव का अङ्ग है।[17]
4. जहाँ रसाभास एवं भावाभास भाव के अंङ्ग है।[18]
5. जहाँ भावशान्ति भाव का अङ्ग है।[19]
6. जहाँ भावोदय(व्यभिचारीभाव) भाव का अङ्ग है।[20]
7. जहाँ भावसन्धि भाव का अङ्ग है।[21]
8. जहाँ भावशबलता भाव का अङ्ग है।[22]

[13]अत्र चुम्बनस्यात्यन्ततिरस्कृतवाच्यस्य। वही पृ. 198

[14]अत्रासीत् फणिपाशबन्धनविधिः शक्त्या भवद्देवरे। वहीं पृ. 198

[15]अत्र 'केनाप्यत्र' …… अनुरणनं वा। वहीं पृ. 199

[16]अयं स रसनोत्कर्षी …… करः। वहीं शलोक 116

[17]कैलासालयभाललोचन रुचा …… समुत्सार्यते। वहीं शलोक 117

[18]अत्युच्चाः परितः …….. मुद्रिताः। वहीं शलोक 118

[19]अविरलकरवाल....क्षणात्। काव्यप्रकाश पृ. 202

[20]वहीं श्लोक 121

[21]वहीं पृ. 203

[22]वहीं पृ. 204

Anusandhaana (Peer-reviewed International Research Journal) 1 - August 2015 ISSN : 2395 – 0528 Published by Aisiri Prakashana (R) Mammatabhibhuta-guNeebhuta-vyaNgya-vimarshah Bipin Kumar Jha 65-71

9. जहाँ शब्दशक्तिमूलध्वनि वाच्य का अङ्ग है।[23]
10. जहाँ अर्थशक्तिमूलध्वनि वाच्य का अङ्ग है।[24]

ध्यातव्य है कि प्रथम उदाहरण से आठवें उदाहरण तक असंलक्ष्यक्रम रसादिध्वनि को ध्यान में रखकर प्रस्तुत किया गया है जबकि नवम एवं दशम ये दो उदाहरण संलक्ष्यक्रम अलङ्कारध्वनि तथा वस्तु ध्वनि को ध्यान में रखकर प्रस्तुत किया गया हैं।

प्रथम से अष्टमपर्यन्त एक असंलक्ष्यक्रम रसादि ध्वनि दूसरे व्यङ्ग्य भावादि ध्वनि का अङ्ग बन रहा है इसी कारण ये अपरस्याङ्ग रूप प्रभेद के तौर पर गिनाया गया है। यहाँ विशेष तौर पर ध्यान देने योग्य है कि मम्मटाचार्य ने 'यः कौमारहरः'[25] में जिस रसवत् अलङकार के बीजरूप को प्रथम उल्लास में दिखाया था तथा चतुर्थ उल्लास में दिङ्मात्र प्रस्तुत कर पञ्चम में निरुपण करेंगे ऐसा आशय प्रस्तुत किया था[26]उसका निर्वहण भी इसी प्रथम से अष्टम उदाहरणों को प्रस्तुत करते हुए किया है।

वस्तुतः रसवदादि चार अलङ्कार है[27]

1. गुणीभूतव्यङ्ग्य में एक रस का अन्य रस के अंग होने पर रसवत् अलंकार[28]
2. भाव के अन्य का अङ्ग होने पर प्रेय अलंकार[29]
3. रसाभास तथा भावाभास के अन्य का अंग होने पर ऊर्जस्वि अलंकार[30]
4. भावशान्ति (आदि) के अन्य के अङ्ग होने पर समाहित अलंकार[31]

[23]वहीं पृ. 206

[24]वहीं पृ. 207

[25]वहीं पृ. 19

[26]ते च गुणीभूताभिधाने उदाहरिष्यन्ते। वहीं पृ. 94

[27]वहीं पृ. 94

[28]वहीं

[29]वहीं

[30]वहीं

[31]वहीं

यहाँ काव्यप्रकाश के द्वारा प्रस्तुत ये प्रथम आठ उदाहरण समीक्षणीय है क्योंकि आठवें उदाहरण के बाद उन्होने कहा है कि ये रसवदादि अलङ्कार हैं।

समीक्षा में स्पष्ट है कि प्रथम उदाहरण तो स्पष्ट रूप से रसवत् अलंकार का उदाहरण है क्योंकि रसवत् का लक्षण स्पष्टतः इस पर आधारित होता है इसके साथ ही अन्य तीन अर्थात प्रेय ऊर्जस्वि तथा समाहित को मिलाकर रसवत् आदि (रसवदादि) चार अलङकारों का उदाहरण ही आचार्य मम्मट के द्वारा प्रस्तुत किया जाना चाहिए। किन्तु कुल आठ उदाहरण दिए गए हैं।प्रथम उदाहरण रसवत् अलङकार की श्रेणी में है। द्वितीय उदाहरण प्रेय अलङ्कार की श्रेणी में आता है तृतीय उदाहरण भी प्रेय का ही माना जाएगा। चतुर्थ ऊर्जस्वि एवं पञ्चम समाहित में समाहित होता है[32] ।अब शेष तीन का अन्तर्भाव कहाँ किया जाए यह प्रशन उठता है क्योंकि आचार्य ने भावोदय भावसन्धि भावशबलत्व को अलङ्कार नहीं माना है। इस जिज्ञासा का प्रशमन पञ्चम उल्लास में ही आचार्य मम्मट ने 'तथापि कश्चित् ब्रूयात्[33]' के माध्यम से कर दिया है। मम्मट ने स्पष्ट किया है कि यद्यपि महिमभट्टादि प्राचीन आचार्यो ने उक्त तीन को अलङ्कार के रूप में परिगणित नही किया है[34]तथापि रसवदादि के समान इन से अन्य का उत्कर्ष होता है इस कारण इन तीनों को भी समाहित में उपलक्षण माना जा सकता है क्योंकि इनमें भी परोत्कर्षत्वरूप लक्षण पाया जाता है। पुनः समाहित में ही अन्तर्भाव होने का कारण बताते हुए आचार्य मम्मट कहते है प्राधान्येन व्यपदेशाः भवन्ति इति क्वचित् केनचित् व्यवहारः।[35]

इसके अनन्तर ग्रन्थकार ने वाच्यसिध्यङ्ग[36] का उदाहरण प्रस्तुत किया है। प्रदत्त उदाहरण में 'विष' पद से जो अर्थ व्यङ्ग्य है, मेध पर आरोपित सर्परूप वाच्यार्थ की सिद्धि का उपकारक होता है अस्तु यह वाच्यसिध्यङ्ग का उदाहरण बना।ग्रन्थकार ने पुनः 'गच्छाम्यच्युत[37]' रूप द्वितीय उदाहरण देने का औचित्य यह है कि है प्रथम में तो एक वक्तृक नहीं है[38]। अस्फुट का उदाहरण[39] देते हुए ग्रन्थकार ने बताया कि यह

[32]वहीं पृ. 204
[33]वहीं पृ. 205
[34]वहीं पृ. 205
[35]वहीं पृ. 205
[36]वहीं पृ. 208
[37]वहीं पृ. 208
[38]वहीं पृ. 209

Anusandhaana (Peer-reviewed International Research Journal) 1 - August 2015 ISSN : 2395 – 0528 Published by Aisiri Prakashana (R) Mammatabhibhuta-guNeebhuta-vyaNgya-vimarshah Bipin Kumar Jha 65-71

सहृदय के लिए भी समझने में क्लिष्ट है अस्तु इसका उदाहरण बना[40] इसी प्रकार सन्दिग्धप्रधान्य के उदाहरण के स्पष्टीकरण में कहा गया है कि यहाँ व्यङ्ग्यप्रधान है या वाच्यप्रधान इस आशय की संदिग्धता के कारण ही अरस्तु विलोचनानि उदाहरणास्वरुप प्रस्तुत किया गया है[41] । इसी प्रकार तुल्यप्राधान्य[42] काक्वाक्षिप्त[43]तथा असुन्दर[44] का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

ग्रन्थकार ने 'एषां भेदा यथायोगं वेदितव्याशच पूर्ववत्'[45] के माध्यम से गुणीभूत व्यङ्ग्य के भेदों का विस्तार दिया है जिसकी विशद चर्चा आचार्य विश्वेश्वर भी करते है। प्रकारान्तर से गुणीभूतव्यङ्ग के 56784 भेदो की चर्चा संकर एंव संसृष्टि के आधार पर आचार्य ने प्रस्तुत की है।[46]

इस प्रकार आचार्य मम्मट ने प्रथित ग्रन्थ काव्यप्रकाश के प्रथम उलास से आंरभ कर चतुर्थ उल्लास में तथा पञ्चम उल्लास में विशद रूप में चर्चा प्रस्तुत की है। आचार्य विश्वेश्वर ने तो सुधासागर मत की चर्चा कर गागर में सागर भरने का काम किया है।

सन्दर्भग्रन्थ-

1. काव्यप्रकाशः,आचार्यमम्मटः, आचार्यविश्वेश्वरः, व्याख्याकारः, ज्ञानमण्डललिमिटेड,२२००५
2. ध्वन्यालोकः,आनन्दवर्धनः,अभिनवगुप्तपादविरचितलोचनटीका,प्रकाशव्याख्याच, व्याख्याकारः,आचार्यजगन्नाथःपाठकः,चौखम्भाविद्याभवनम्, वाराणसी,२००९.
3. ध्वन्यालोकः,आनन्दवर्धनः,व्याख्याकारः,आचार्यविश्वेश्वरः,ज्ञानमण्डललिमिटेड,२२००५.

[39]वहीं पृ. 209
[40]वहीं पृ. 209
[41]वहीं पृ. 210
[42]वहीं पृ. 210
[43]वहीं पृ. 210
[44]वहीं पृ. 211
[45]वहीं पृ. 211
[46]वहीं पृ. 214

4. ध्वन्यालोकः, आनन्दवर्धनः ,टीकाकारः, रामसागरत्रिपाठी, तारावतीटीका,मोतीलालवनारसीदास,दिल्ली.
5. जगन्नाथः,*रसगङ्गाधरः*,व्या०मद्दनमोहनझा, चौखम्बाविद्याभवनम्,वाराणसी, 2007
6. पी०वी०काणे, *संस्कृतकाव्यशास्त्रस्यइतिहासः*, अनुवादक- इन्द्रचन्द्रः,मोतीलालबनारसीदासः,पूणे, 2011
7. मम्मटः,*काव्यप्रकाशः*, झलकीकरोपनाम्नाभट्टवामनाचार्येणविरचितयाबालबोधिन्याख्यटीकयासमन्वितः,भाण्डारकर-प्राच्यविद्या-संशोधन-मन्दिरम्,पुणे, 1983
8. मम्मटः,*काव्यप्रकाशः*,व्या०चण्डीदासः,स०रामगोविन्दशुक्ल, सम्पूर्णानन्दसंस्कृत-विश्वविद्यालयः,वाराणसी,1990
9. मम्मटः,*काव्यप्रकाशः*,व्या०विश्वेश्वरसिद्धान्तशिरोमणि, ज्ञानमण्डललिमिटेड-प्रकाशनस्थानम्वाराणसी, 2005
10. विश्वनाथः,*साहित्यदर्पणः*, व्या०सत्यव्रतः, शशिकलाहिन्दीव्याख्योपेतः,चौखम्बाविद्याभवनम्, वाराणसी, 2010
11. विश्वनाथः,*साहित्यदर्पणः*,व्या०श्रीशालग्रामविरचितविमलाहिन्दीव्याख्ययासहितम्, मोतीलालबनारसीदासः,वाराणसी,1986
12. विश्वनाथः,*साहित्यदर्पणः*,व्या०सत्यव्रतसिंहः,चौखम्बाविद्याभवनम्,वाराणसी, 1997